प्राक्कथन

साहित्य और समाज का अन्योन्याश्रित संबंध है। साहित्य समाज जीवन का सिर्फ चित्रण न होकर समाज में होनेवाले परिवर्तन का प्रमाण होता है। भारतीय समाज में विविधता होने पर भी भारतीयता ही प्रमुख विचारधारा है। वर्ण, धर्म, कर्म पर आधारित यह समाज व्यवस्था साहित्य का केंद्र है। उच्च वर्ग के साथ – साथ उपेक्षित, दलित, किसान, मजदूर, विधवा, वेश्या, आदिवासी की जीवन गाथा आधुनिक भारतीय साहित्य है। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक क्षेत्रों में होनेवाला परिवर्तन, पर्यटको और ईसाईयों का बढता संपर्क, विकास योजना, खान – खदान जैसे उद्योगो का निर्माण के कारण आदिवासी चर्चित हो रहे हैं।

हिंदी के आँचलिक उपन्यासकारों ने विभिन्न अँचलों में रहनेवाले आदिवासी जन – जीवन का चित्रण किया है। भारत में सबसे भील, गोंड, भोकसा, भुइया, खारिया, बॅगा, चोंलु, बंजारा आदि जन जातियाँ हैं। बस्तर, अलमोड़ा, मिझोराम, बिहार, मध्यप्रदेश, झारखंड, उत्तराचंल, छतीसगढ, हिमाचल प्रदेश, नागालँड, असम और पूर्वी महाराष्ट्र आदि विभिन्न अँचलों में आदिवासी जन जातियाँ निवास करती है।

स्वातंत्र्यपूर्व कालखंड में अंग्रेजों के बारे में काई चर्चा नहीं। जीन व्यक्तिगत संपत्ति के रूप में बदलने का कार्य अंग्रेजों ने किया। लोगों के नाम पर जमीन की। लेकिन आदिवासी दुर्गम क्षेत्र में रहने के कारण और कसी स्थायी जगह पर अपना हक न जता पाने के कारण उनके नाम पर जमीन नहीं हो सकी। आज आजादी के वर्ष बाद भी आदिवासी अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहे है। आज तो आदिवासियों को उनके जंगलों से भी बेदखल किया जा रहा है।

श्री प्रकाश मिश्र –'जहाँ फूलते हैं', मनोहर पाठक –'गगन घटा गहरानी', तेजिंदर –'काला पदरी', मैत्रेयी पुष्पा –'अल्मा कबूतरी', भगवानदास मोरवाल –'काला पहाड़', मणि मधुकर –'पिंजरे में पन्ना', राकेश वत्स –'जंगल

के आस –'पास', सुरेंद्र सिंह श्रीवास्तव –'वनतरी', डॉ.एन.रामन नायर –'सागर की गलियाँ' शिवप्रसाद सिंह –'शेलूष', संजीव –'धार', वीरेंद्र जैन –'पार', संजीव –'जंगल जहाँ शुरू होता है' आदि उपन्यासों में आदिवासी जन – जीवन का चित्रण हुआ है। इसके साथ ही हिंदी कहानियों में और कविताओं में आदिवासी जनजीवन का चित्रण हुआ है।

शोध प्रबंध का महत्व एवं प्रयोजन –

दलित साहित्य, दलित स्त्रीवादी साहित्य और आदिवासी साहित्य में हमारे समाज का यथार्थ वर्णन जिनमें हमारे देश के वर्णवादी और प्रभुत्ववादी समाज का घिनौना चेहरा उजागर होता है। आदिवासी साहित्य, दलित साहित्य की तुलना में कम लिखा जा रहा है। इसका मूल कारण भाषा की विविधता है। आदिवासी समाज में लगभग 600 से अधिक भाषाएँ हैं। भारत में लगभग 90 भाषाओं में आदिवासी साहित्य रचा जा रहा है। आदिवासियों का जीवन मानवीय रिश्तों पर आधारित है। उनके लिए प्रकृति जंगल और अपनी संस्कृति का विशेष महत्व है। उनकी भाषाएँ और जीवन शैली अलग है। आदिवासियों के पास अपनी संस्कृति, भाषा, जीवन शैली, जमीन और जंगल है, जो विकास के नाम पर उनसे छीने जा रहे हैं। विकास के नाम पर जमींने छीन ली जाती और उनकी संस्कृति नष्ट होने के कगार पर पहुँच जाती है। आजादी के लिए आदिवासियों का संघर्ष विशेष महत्व रखता है।

आदिवासी नारी और स्वाभिमानी आदिवासी का व्यक्तित्व जानने की दृष्टि से इस विषय का महत्व है। नगरीकरण, खानखदान, जंगल कटाई, विस्थापन से प्रभावित आदिवासी जनजीवन पर सोचना आवश्यक है। इस दृष्टि से यह विषय महत्वपूर्ण है।

आंतरराष्ट्रीय दर्जा –

सारे विश्व में सभी लोग पहले आदिम व्यवस्था में ही रहते थे, किंतु अनिवार्यतः जातियों में विकसित नहीं हुए। किन्तु यह अनोखा स्वरूप मुख्यतः उन परिस्थितियों के कारण है जिसमें आदिवासी समाज व्यवस्था के मूल तत्व किसी न किसी प्रकार जातीय प्रणाली में स्थिर पाए जाते हैं। आदिवासी जातियों में विकसित हुए किंतु वे जातियाँ अपने आदिवासीय अतीत के अवशेषों को नहीं

त्याग पाई।

राष्ट्रीय महत्व –

भारत में आदिवासी समाज, संस्कृति और साहित्य की अस्मिता का संकट तो सदियों से ही रहा है, अब तो अस्तित्व का संघर्ष जारी है। नक्लवाद, विस्थापन, जंगल, जमीन में बेदखल होने के प्रति आदिवासी की चेतना को हमारा यांत्रिकी या मुद्रित मीड़िया अपेक्षित ध्यान नहीं दे रहा है।

विस्थापन, पलायन, सांस्कृतिक, राजनीतिक व उनके प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के विरूध्द उठी मुख्य और सक्रिय आवाज स्वयं आदिवासियों की है। ये आवाजे देश के कोने – कोने से निकलकर अपने अधिकारों, चुनावों, विकल्पों, सरकार की गलत नीतियों और विकास के नाम पर विध्वंस के मॉडल के खिलाफ साहित्यिक, भाषाई, सांस्कृति आंदोलन के रूप में मुखरित हो रही है।

शोध प्रबंध का उद्देश्य –

उच्च वर्ग के साथ – साथ उपेक्षित, दलित, किसान, मजदूर, विधवा, वेश्या, आदिवासी की जीवन गाथा आधुनिक साहित्य है। संस्कृति का बिखराव शहरों में ही नहीं दूर दराज प्रदेशों के आदिवासी क्षेत्रों में भी तेजी से फैल रहा है। आर्थिक विपन्नता के स्वतंत्रता के इतने वर्ष बाद भी उनकी स्थिति में कोई सुधार नहीं किया है। अपने क्षेत्र में रोजगार के अवसरों की अब उपलब्धता उनके सपनों को अपनी जमीन से दूर कर रहे हैं। औद्योगीकरण किस प्रकार गाँव तथा आदिवासियों को विस्थापित कर रहा है।

आदिवासी की परंपरा, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं भाषा शैली आदि का चित्रण करना यह उद्देश्य है।

जंगल निवासी विस्थापित होकर लाभ से वंचित रहे, उनकी व्यथा बताना यह भी उद्देश्य रहा है।

औद्योगीकरण, खानखदान, पर्यटन के कारण आदिवासी का विस्थापन, उससे उत्पन्न विद्रोह को स्पष्ट करना यह भी उद्देश्य है

आदिवासी का अर्थ, आदिवासी संस्कृति, उनकी समस्या, उनकी सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि कैसी है? उस पर प्रकाश डालना प्रस्तुत शोध

– प्रबंध का उद्‌देश्य है।

शोध – विषय की व्याप्ति और सीमा –

शोध विषय को सुगठित रूप से संपन्न करने के लिए पूर्व नियोजन की अवश्यकता होती है। शोध – कार्य अपनी और व्याप्ति में ही संपन्न होता है। इसलिए शोध – विषय की रूपरेखा सीमित और सुचारू रूप से बनना अनिवार्य हो जाता है। वस्तुतः किसी विषय का सूक्ष्म, गहन एवं विस्तृत अध्ययन करने के लिए उनके विविध पहलुओं को विविध कोणों से देखना, उनका अध्ययन करना, विश्लेषण करके अनुसंधान करना आवश्यक है। सामान्यतः किसी विषय को सामाजिक, आर्थिक, राजनीति, धार्मिक, सांस्कृतिक, भाषा आदि विभिन्न दृष्टि से परखा जाता है।

प्रस्तुत शोध – विषय 'समकालीन हिंदी साहित्य के परिप्रेक्ष्य में आदिवासी जनजीवन' मुख्यतः आठ अध्यायों में संपन्न हुआ है। शोध – प्रबंध के अंतर्गत समकालीन हिंदी साहित्य का सूक्ष्मता से अध्ययन हो इसलिए सुविधा की दृष्टि से मैंने प्रस्तुत विषय का विभाजन निम्नलिखित आठ अध्यायों में कर अध्ययन किया है।

वस्तुतः हर विषय अपने आप में गहन एवं विस्तृत होता है। वह अपने विस्तार के साथ सामने आता है। प्रस्तुत शोध – प्रबंध के अंतर्गत विवेच्य विषय का सूक्ष्मता से और सुचारू रूप से अध्ययन संपन्न करने की दृष्टि से मैंन अनुसंधान क्षेत्र आदिवासी केंद्रित साहित्य तक सीमित रखा है।

अनुसंधान की पद्‌धतियाँ –

अनुसंधान के लिए गुणात्मक पद्‌धति, पुस्तकालय अध्ययन पद्‌धति, वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्‌धति एवं शास्त्रीय अनुसंधान आदि पद्‌धतियों का प्रयोग किया गया है।

अनुसंधान के पहले मेरे मन में निम्न प्रश्न उपस्थित हुए थे –

1. आदिवासी : अर्थ, परिभाषा, व्याप्ति, स्वरूप किस प्रकार है?
2. आदिवासियों की जीवन पद्‌धति किस प्रकार है?
3. आदिवासियों की समस्या कौनसी है?
4. आदिवासी की सांस्कृतिक जीवन किस प्रकार है?

5. आदिवासियों की आर्थिक परिस्थिति किस प्रकार है?
6. आदिवासियों की धार्मिक परिस्थिति किस प्रकार है?
7. आदिवासियों की राजनीतिक और सामाजिक जीवन किस प्रकार है?

समग्र अध्ययन के पश्चात् उक्त प्रश्नों के जो उत्तर प्राप्त हुए वे निष्कर्ष के रूप में उपसंहार में दर्ज किए हैं।

अध्याय विभाजन –

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने शोध – प्रबंध निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित किया है।

समकालीन हिंदी साहित्य के परिप्रेक्ष्य में आदिवासी जनजीवन

प्रथम अध्याय : आदिवासी : अर्थ, परिभाषा, स्वरूप और व्याप्ति –

आदिवासी : अर्थ, परिभाषा, स्वरूप और व्याप्ति पर प्रकाश डाला है। भारत में आदिवासी का स्थान एवं क्षेत्र, आदिवासी विषयक दृष्टिकोण, भारतीय समाज व्यवस्था और आदिवासी, आदिवासी आंदोलन आदि का संक्षिप्त विवेचन – विश्लेषण किया गया है। अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिए गए हैं।

द्‌वितीय अध्याय : सामाजिक संदर्भ में आदिवासी जनजीवन –

इस अध्याय के अंतर्गत आदिवासियों का शोषण, विवाहेत्तर यौन संबंध, शिक्षा, विवाह संबंधी प्रथाएँ, पारिवारिक जीवन, नारी शोषण, जात पंचायत, घोटुल, नारी जीवन, आदिवासी जनजीवन और संघर्ष, कृषि जीवन आदि का संक्षिप्त विवेचन किया है। अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिए गए हैं।

तृतीय अध्याय : सांस्कृतिक संदर्भ में आदिवासी जनजीवन –

इस अध्याय के अंतर्गत लोकनृत्य, लोकगीत, शृंगार एवं गूँदना, जन संस्कार एवं नामकरण, पोशाक, त्यौहार, खान – पान, रहन – सहन, मृतक संस्कार, लोककथा आदि का संक्षिप्त विवेचन – विश्लेषण किया है।

चतुर्थ अध्याय : आर्थिक संदर्भ में आदिवासी जनजीवन –

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत गरीबी, भूख से पीड़ित, जल की असुविधा, आर्थिक शोषण, अस्पताल की सुविधाओं से वंचित, पूँजीपति और श्रमिकों का संघर्ष, कृषि व्यवसाय, अर्थाभाव की स्थिति आदि बातों का विवेचन – विश्लेषण

किया है। अध्याय के अंत में प्राप्त तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दिए हैं।

पंचम् अध्याय : राजनीतिक संदर्भ में आदिवासी जनजीवन –

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत वर्तमान राजनीति, चुनाव का नया रूप, पुलिस के अत्याचार, आतंक और कुटिलता, वोट में राजनीति, पोलिंग बूथ पर कब्जा, पंचायत व्यवस्था में भ्रष्टाचार, पंचायत व्यवस्था आदि का संक्षिप्त विवेचन विश्लेषण किया है। अंत में प्राप्त तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दिए गए हैं।

षष्ठम् अध्याय : धार्मिक संदर्भ में आदिवासी जनजीवन –

इस अध्याय के अंतर्गत भूत – प्रेत एवं पूजा पाठ संबंधी मान्यताएँ, रूढ़ि परंपरा, अंधविश्वास, विविध मनौतियाँ, देवी – देवता, बलि प्रथा, देवी – देवताओं में विश्वास, धार्मिक व्यक्ति द्वारा शोषण आदि का संक्षिप्त विवेचन विश्लेषण किया है।

सप्तम् अध्याय : हिंदी के आदिवासी जीवन केंद्रित साहित्य : भाषा शैली –

इस अध्याय के अंतर्गत भाषा, मुहावरें तथा कहावतें, शब्द प्रयोग, आदिवासी और भाषा आदि का संक्षिप्त विवेचन – विश्लेषण किया है। अध्याय के प्राप्त तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दिए हैं।

अष्टम अध्याय :समकालीन हिंदी साहित्य में आदिवासियों की समस्याएँ एवं समाधान

इस अध्याय के अंतर्गत ऋणग्रस्त की समस्या, वन पर आधारित जीविकोपार्जन की समस्या, अंधविश्वास की समस्या, जातीय भेदाभेद, पहचान की समस्या, धर्मान्तरण की समस्या, विस्थापन की समस्या, आवास की समस्या, अस्थायी खेती, शोषण की समस्या, आदिवासी नारी की समस्या, अशिक्षा की समस्या, स्वास्थ्य की समस्या, प्रवसन की समस्या, खानदान की समस्या, आदिवासी समाज की समस्याओं का समधान आदि का विवेचन विश्लेषण किया है। अंत में प्राप्त तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दिए गए हैं।

उपसंहार –

अंत में उपसंहार के रूप में इस शोध – प्रबंध का सार रूप दिया है। इसमें पूर्व विवेचित अध्यायों के प्राप्त तथ्यों के आधार पर निकाले गए निष्कर्षों को दिया गया है। तत्पश्चात साक्षात्कार, आधार ग्रंथ, संदर्भ ग्रंथ सूची दी है।

कृतज्ञता – ज्ञापन

'समकालीन हिंदी साहित्य के परिप्रेक्ष्य में आदिवासी जनजीवन' अनुसंधान के दौरान प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से विभिन्न संस्था, विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, विद्वजन, परिवार के सदस्य एवं मित्रों का महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है। सहायता करनेवाले हितैषियों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना दायित्व मानता हूँ।

सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर (महाराष्ट्र) के प्रथम कुलपति गुरूवर्य डॉ.इरेश स्वामी जी, डॉ.अमरसिंह वधान जी (पंजाब), डॉ.चंदशेखरन नायर जी (केरल), कुलसचिव डॉ.प्रदीप शर्मा जी (चेन्नई), डॉ.अर्जुन चव्हाण (महाराष्ट्र), डॉ. संजय नवले (महाराष्ट्र), डॉ.इसपाक अली (कर्नाटक), डॉ.निर्मला मौर्य, डॉ.संजय मादार (चेन्नई), डॉ.एम.डी.शिंदे, प्राचार्य डॉ.अनंत शिंगाडे (सोलापुर), डॉ.राजेंद्र परदेशी (उ.प्र.), डॉ.पद्मावती (कोईम्बतुर), डॉ.अनिल साळुंखे (सोलापुर) आदि विद्वानों का प्रस्तुत शोध – कार्य के बारे में मुझे समय – समय पर मार्गदर्शन मिलता रहा। अतः इन सभी का मैं ऋणी हूँ। भारत महाविद्यालय के सभी प्राध्यापक एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारियों का भी मैं कृतज्ञ हूँ।

डॉ.गंगाधर बिराजदार, प्रा.महेश तानवडे, डॉ.संघप्रकाश दुड्डे, डॉ. अरविंद दळवी, प्रा.रमेश पाटील, डॉ.शिवाजी वाघमोडे, प्रा.शाम गाजरे, प्रा.अनिल मुंगुसकर, डॉ.संजय चौधरी, डॉ.सुनिता कांबळे, डॉ.नवनाथ गाडेकर, प्रा.तुकाराम आघाव, प्रा.वसंत यादव, प्रा.संतोष कदम, प्रा.शिवाजी काशिद, श्री.शशिकांत वाघमारे, श्री.कैलास सातव, श्री.दिगंबर निर्मळ, श्री.कानिफनाथ आगम आदि प्राध्यापक एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारियों का ऋणी हूँ। साथ ही मेरी जीवन संगिनी सौ.करूणा पंडित बन्ने, पुत्र अर्जुन और अनय, चिंतन, लेखन करने में मुझे साथ देनेवाला मेरा परिवार है।

जिस संस्था में मैं सेवारत हूँ उस भारत शिक्षण प्रसारक मंडल, जेऊर (म.रेल) (सोलापुर) के अध्यक्ष आ.नारायण (आबा) पाटील जी का आशीर्वाद, प्रेरणा से प्रगति कर रहा हूँ। इनके प्रति मैं ऋणी हूँ।

प्रस्तुत शोध – प्रबंध के लिए आवश्यक संदर्भ ग्रंथों की प्राप्ति मुझे पुणे विश्वविद्यालय, पुणे (महाराष्ट्र), शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर (महाराष्ट्र), दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, उच्च शिक्षा एवं शोध संस्थान, मद्रास (केरल), दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश), संगमेश्वर महाविद्यालय, सोलापुर (महाराष्ट्र), दयानंद महाविद्यालय, सोलापुर (महाराष्ट्र), सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर (महाराष्ट्र), भारत महाविद्यालय, जेऊर (म.रेल) सोलापुर (महाराष्ट्र) आदि समृद्ध ग्रंथालयों का लाभ हुआ।

प्रस्तुत शोध – प्रबंध का सुंदर एवं सुचारू रूप से टंकन करनेवाले श्री.निकील मोरे जी का भी मैं आभारी हूँ।

इसके सिवा जिन विद्वानों, साहित्यकारों, शुभचिंतकों एवं मित्रों ने प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से प्रेरणा, सहयोग, परामर्श, सुझाव एवं आशीर्वाद देकर अनुग्रहित किया, उन सभी कृति कृतज्ञ हूँ।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली ने आर्थिक सहयोग दिया इसीलिए उनका भी ऋणी हूँ।

स्थान – जेऊर (म.रेल) सोलापुर, (महाराष्ट्र) **शोध – छात्र**

तिथि – फरवरी, 2017

डॉ.पंडित बन्ने

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय : आदिवासी : अर्थ, परिभाषा, स्वरूप और व्याप्ति **पृ.1 – 13**

प्रस्तावना –

1.1 आदिवासी का अर्थ

1.2 आदिवासी की परिभाषा

1.3 आदिवासी स्वरूप और व्याप्ति

1.4 भारत में आदिवासी जाति का स्थान एवं क्षेत्र

1.5 आदिवासी विषयक दृष्टिकोण

1.6 भारतीय समाजव्यवस्था और आदिवासी

1.7 आदिवासी आंदोलन

निष्कर्ष :–

संदर्भ सूची

द्वितीय अध्याय : सामाजिक संदर्भ में आदिवासी जनजीवन **पृ.14 – 39**

प्रस्तावना

2.1 आदिवासियों का शोषण

2.2 विवाहेत्तर यौन संबंध

2.3 शिक्षा

2.4 विवाह संबंधी प्रथाएँ

2.5 पारिवारिक जीवन

2.6 नारी शोषण

2.7 जात पंचायत

2.8 घोटुल

2.9 नारी जीवन

2.10 आदिवासी जनजीवन और संघर्ष

2.11 कृषि जीवन

निष्कर्ष

संदर्भ सूची

तृतीय अध्याय : सांस्कृतिक संदर्भ में आदिवासी जनजीवन **पृ.40 – 51**

प्रस्तावना

3.1 लोकनृत्य

3.2 लोकगीत

3.3 शृंगार एवं गूँदना

3.4 जन्म संस्कार एवं नामकरण

3.5 पोशाक

3.6 त्यौहार

3.7 खान – पान – रहन – सहन

3.8 मृतक संस्कार

3.9 लोककथा

निष्कर्ष

संदर्भ सूची

चतुर्थ अध्याय : आर्थिक संदर्भ में आदिवासी जनजीवन **पृ.52 – 63**

प्रस्तावना

4.1 गरीबी

4.2 भूख से पीड़ित

4.3 जल की असुविधा

4.4 आर्थिक शोषण

4.5 अस्पताल की सुविधाओं से वंचित

4.6 पूँजीपति और श्रमिकों का संघर्ष

4.7 कृषि व्यवसाय

4.8 अर्थाभाव की स्थिति

निष्कर्ष

संदर्भ सूची

पंचम अध्याय : राजनीतिक संदर्भ में आदिवासी जनजीवन **पृ.64 – 75**

प्रस्तावना

5.1 वर्तमान राजनीति

5.2 चुनाव का नया रूप

5.3 पुलिस के अत्याचार

5.4 आतंक और कुटिलता

5.5 वोट की राजनीति

5.6 पोलिंग बूथ पर कब्जा

5.7 पंचायत व्यवस्था में भ्रष्टाचार

5.8 पंचायत व्यवस्था

निष्कर्ष

संदर्भ सूची

छष्ठम् अध्याय : धार्मिक संदर्भ में आदिवासी जनजीवन पृ.76 – 83

प्रस्तावना

6.1 भूत – प्रेत एवं पूजा पाठ संबंधी मान्यताएँ

6.2 रूढ़ि परंपरा

6.3 अंधविश्वास

6.4 विविध मनौतियाँ

6.5 देवी – देवता

6.6 बलि – प्रथा

6.7 देवी – देवताओं में विश्वास

6.8 धार्मिक व्यक्ति द्वारा शोषण

निष्कर्ष

संदर्भ सूची

सप्तम अध्याय : आदिवासी जनजीवन केंद्रित साहित्य : भाषा शैली पृ.84 – 96

प्रस्तावना

7.1 भाषा

7.2 शैली

7.3 मुहावरे तथा कहावतें

7.4 विविध शब्द प्रयोग

7.5 आदिवासी और भाषा

निष्कर्ष

संदर्भ सूची

अष्टम् अध्याय :समकालीन हिंदी साहित्य में आदिवासियों की समस्याएँ एवं समाधान

प्रस्तावना **पृ.97 – 108**

8.1 आदिवासी समाज की समस्याएँ

8.1.1 ऋणग्रस्त की समस्या

8.1.2 वन पर आधारित जीविकोपार्जन की समस्या

8.1.3 अंधविश्वास की समस्या

8.1.4 जातीय भेदाभेद

8.1.5 पहचान की समस्या

8.1.6 धर्मान्तरण की समस्या

8.1.7 विस्थापन की समस्या

8.1.8 आवास की समस्या

8.1.9 अस्थायी खेती

8.1.10 शोषण की समस्या

8.1.11 आदिवासी नारी की समस्या

8.1.12 अशिक्षा की समस्या

8.1.13 स्वास्थ्य की समस्या

8.1.14 प्रवसन की समस्या

8.1.15 खानखदान की समस्या

8.2 आदिवासी समाज की समस्याओं का समाधान

निष्कर्ष

संदर्भ सूची

उपसंहार **पृ.109 – 117**

साक्षात्कार **पृ.118 – 129**

संदर्भ ग्रंथ सूची **पृ.130 – 135**